Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

रामचरितमानस में वर्णित वनस्पतियों के औषधीय तथा अन्य बहुपयोगी गुण

Navita Rani[1]* Dr. Govind Dwivedi[2]

[1] Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Assistant Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध संसार के आरम्भ से अक्षुण्ण ओर अखंड बना हुआ है। भारतीय सन्दर्भ से देखें तो वैदिक संस्कृति में प्रकृति को ही ईश्वर प्रदत्त मानकर उनके मंत्रोचार का विधान प्राप्त होता है, भारतीय संस्कृति में वनस्पतियों का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है। जहाँ पश्चिमी वैज्ञानिकों ने 'Man and the Environment' की परिकल्पना को आधार बनाकर प्रकृति व मनुष्य को अलग-अलग मानकर उनके सम्बन्धों की व्याख्या की है, वहीं भारतीय परम्परा में मनुष्य सदैव ही उस प्रकृति का अंश माना गया है, वह प्रकृति की उत्कृष्ट रचना अवश्य है, किन्तु प्रकृति से उत्कृष्ट नहीं।

----------X----------

प्रस्तावना:

मानस में गोस्वामीजी ने भारतीय संस्कारों में रचे-बसे पर्यावरण को अभिलक्षित किया है, वनस्पतियों का वर्णन जिस प्रकार से मानस में तुलसीदासजी ने किया है उससे यह प्रतीत होता है कि वनस्पतियों के प्रति उनकी दृष्टि कितनी गहन और सूक्ष्म थी। मानस में तुलसीदासजी ने वनस्पतियों के गुणों को बताते हुए, अनेकों नीति वचन तथा उपमाएं दीं हैं यथा बालकाण्ड में उन्होंने संतों के चरित्र की तुलना कपास के गुणों से की है, 'साधु चरित सुभ चरित कपासू'। (बालकाण्ड, दो. 1, चै. 3)।

तुलसीदास जी वृक्षारोपण कार्य को उपदेशात्मकता से दूर रखकर एक स्वाभाविक कृत्य की ओर ले गए उन्होनें वृक्षारोपण का कार्य रामचरितमानस में अत्यन्त सहजता से दर्शाया । ऐसी सहजता कि वह हमारी दिनचर्या का एक अंग बन जाय। यह वृक्षारोपण पर्यावरण संरक्षण ही नहीं अपितू प्रकृति संरक्षण भी है जिससे मानव जाति के स्वास्थय सम्बन्धी समस्याओं का निदान भी होता है। रामायण तथा रामचरितमानस में 'संजीवनी बूटी' का प्रसंग द्योतक है कि प्रकृति में उपलब्ध दुर्लभ बूटी-संजीवनी से मृत प्रायः शरीर भी जीवित हो सकता है आवश्यकता केवल उन औषधीय जड़ी-बूटियों के बारे में ज्ञान की है। भारत में आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली प्राकृतिक जड़ी-बूटियों के औषधीय गुणों पर ही आधारित है परन्तु पाश्चात्य ऐलोपेथी चिकित्सा प्रणाली के प्रचार प्रसार ने इस आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली को न केवल अत्यधिक हानि पहुँचाई वरन् इसको अनुपयोगी सिद्ध करने में भी कोई कोर कसर नहीं रखी है। स्वतन्त्र भारत में रामराज्य की परिकल्पना करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'यंग इण्डिया' मे लिखा था – "अंग्रेजों ने निष्चय ही चिकित्सा व्यवसाय का उपयोग हमें दासता में बांध रखने के लिए सफलतापूर्वक किया है।" पाश्चात्य चिकित्साशास्त्र का अध्ययन करना हमारी दासता बढ़ाना है। यह प्रणाली बहुत खर्चीली है इसे स्वयं डाक्टर भी जानते है। इसमें रोग परीक्षा के लिए रक्त-परीक्षा, मल-परीक्षा, कफ-परीक्षा आदि कितनी ही प्रकार की परीक्षाएं चलती है, जिन पर काफी खर्च पड़ जाता है। डाक्टरों की फीसें बहुत मंहगी होती है। इसका विकास यूरोपीय देशों में हुआ है, उन्हीं देशों के जलवायु में पली हुई जनता के रहन-सहन, आहार-विहार को दृष्टि में रखकर ही यह चिकित्सा प्रणाली बनाई गयी है। परिणामस्वरूप ये औषधियाँ भारतीय जनता की प्रकृति, जलवायु-सम्बधी दशाओं के बिल्कुल अनुपयुक्त सिद्ध हुई है। रोगियों पर इनका कुप्रभाव देखने में आता है। ऐलोपेथिक औषधियों को तैयार करने में प्रायः तीव्र सुरा, स्पिरिट का उपयोग होता है; जिनका प्रयोग प्रायः अपने यहाँ निषिद्ध माना जाता है। औषधियों का प्रयोग रोग निरोग के लिए किया जाता है। रोग-परीक्षा में भूल हुई तो विपरीत परिणाम अवश्यम्भावी है। यह दोष आयुर्वेद में नहीं है; क्योंकि इसमें दोषों के विपरीत औषध-प्रयोग होता है। अतः रोग का नाम निश्चित न होने पर भी दोष- विपरीत औषधि लाभ कर देती है। (परन्तु समय, परिवेश परिवर्तन होने

www.ignited.in

के कारण एलोपेथी चिकित्सा आज के समय की आवश्यकता बन गई है। इस बात को भी हम नकार नही सकते है)

इसलिए प्रकृति में उपलब्ध औषधीय गुणों से भरपूर वनस्पति का ज्ञान मानवजाति के स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है और इस ज्ञान का सर्वोत्तम स्त्रोत रामायण तथा रामचरित मानस माने जा सकते हैं क्योंकि तुलसीदास जी ने विस्तृत रूप से इन औषधीय गुणों से भरपूर प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का उल्लेख किया है। रामचरितमानस में प्रकृति में उपलब्ध औषधीय तत्त्वों का प्रतीकात्मक रूप से बहुत ही सुन्दर वर्णन किया हैं। इस संदर्भ में तीन दृष्टान्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं जिनमें सर्वाधित चर्चित दृष्टान्त-युद्ध के समय लक्ष्मण जी के मूर्छित होने पर लंका से वैद्य सुसैन को बुलाया जाना और संजीवनी बूटी द्वारा लक्ष्मण जी का उपचार करना हैं जिसका उल्लेख करते हुए तुलसीदास जी ने लिखा हैं-

"राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन।

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवन सुत लेन।।[49]

देखा सैल न औषध चीन्हा।

सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा।

गहि गिरि निसि नभधावत भयऊ।

अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ।।[50]

हरषि राम भेटेउ हनुमाना।

अति कृतज्ञ प्रभु परम सुजाना।

तुरत वैद तब कीन्ह उपाई।

उठि बैठे लछिमन हरशाई।"[51]

दूसरा महत्त्वपूर्ण दृष्टान्त हमारी पुरातन चिकित्सा प्रणाली से सम्बन्धित है जिसके अन्तर्गत सती अहिल्या को भगवान श्री राम द्वारा पाषाण (मूर्छित) अवस्था से चरण धूलि द्वारा जीवित अवस्था में लाते हैं।

"जे पद परसि तरी रिषिनारी।

दंडक कानन पावनकारी।।"[52]

वास्तव में यह भगवान राम के किसी चमत्कार का परिणाम नहीं था बल्कि इससे पूर्व जब भगवान राम गुरु विश्वामित्र से विद्या ग्रहण कर रहे थे तो गुरु विश्वामित्र ने उन्हें कुछ औषधियों से विभूषित किया था जो बिना भोजन तथा जल के शरीर को स्वस्थ रख सकती है।

"तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही।

विद्यानिधि कहुँ विद्या दीन्ही।।

जाते लाग ना छुधा पिपासा।

अतुलित बल तनु तेज प्रकासा।।"[53]

हमारी पुरातन आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली का तीसरा दृष्टान्त जो रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी ने समाहित किया है वह कुछ भिन्न परन्तु अति महत्त्वपूर्ण है यह दृष्टान्त है कि हरिभजन को अर्थात् भक्तिभाव को औषधी से भी अधिक लाभकारी मानने की हमारी संस्कृति रही हैं इस सांस्कृतिक पक्ष को तुलसीदासजी ने काकभुशुण्डिजी के माध्यम से कहा है-

'जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल।

से कृपाल मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल।। [54]

हरिभजन एवं भक्ति, ज्ञान विज्ञान से भी श्रेष्ठ हैं इसका संकेत रामचरितमानस में स्पष्ट रूप से दिखता है। अर्थात पूर्ण समर्पण युक्त भक्ति भाव किसी चमत्कारी औषधी या ज्ञान विज्ञान से कम नहीं है।

'सो सुतंत्र अवलंब न आना।

तेही आधीन ज्ञान विग्याना।

भगति तात अनुपम सुखमूला।

मिलई सो संत होइँ अनुकूला।।'[55]

[49] लंकाकाण्ड, दो. 55

[50] लंकाकाण्ड, दो. 57 के अग्रिम चै. 4

[51] वहीं. दो. 61 के अग्रिम चै. 1

[52] सुन्दरकांड, दो. 41 के अग्रिम चै. 3

[53] बालकांड, दो. 208 ख के अग्रिम चै. 4

[54] उत्तरकाण्ड दो. 124 (क)

[55] अरण्यकांड दो. 15 के अग्रिम चै. 2

www.ignited.in

आयुर्वेदीय चिकित्सा प्रणाली के लिए अति महत्त्वपूर्ण यदि कुछ है तो वह है वनस्पतियाँ और जड़ी-बूटीयाँ जो रामचरितमानस में पूर्ण सम्पन्नता के साथ तुलसीदास जी द्वारा कही गई है। उन्होनें रामचरितमानस में वनस्पतियों का संरक्षण संवर्द्धन कर इनके महत्त्व को जनसाधारण के मन मस्तिष्क पर उकेरा है। उचित स्थान पर उचित ढंग से व अवरानुकूल वर्णित की गई बहुपयोगी गुणों एवं औषधीय गुणों से युक्त वनस्पतियों को रामचरितमानस का जान प्राण कहें तो अनुचित ना होगा।

इस अध्याय में रामचरितमानस में वर्णित प्रमुख वनस्पतियों के हिन्दी, अंग्रेजी, वनस्पतिक नाम, मानस में उनके संदर्भ स्थान एवं वनस्पतियों के औषधीय तथा अन्य बहुउपयोगी गुणों को सचित्र प्रस्तुत करने का प्रयास है।

रामचरितमानस में वर्णित वनस्पतियों के हिन्दी, अंग्रेजी तथा वनस्पतिक नाम?

क्रमांक	हिन्दी नाम	अंग्रेजी नाम	वनस्पतिक नाम
1-	अनार	Pomegranate	Punica Granatum
2-	अशोक	Jonesia Ashoka	Saraca asoca
3-	अच्छत	Paddy/Rice	Oryza Sativa
4-	अर्क/मदार	Sodam Apple/Apple of Sodom/Kapok tree/Rubber tree/Rubber bush	Calotropis Gignatea
5-	अक्षय वट		
6-	आम	Mango Tree	Mangifera indica
7-	आँवला	Emblic Myrobalan	Phyllanthus emblica
8-	कटहल	Jack Fruit	Artoearpus heterophyllus
9-	कदम्ब	Kadamba	Anthocephalus cadamba
10-	कपास	Indian Cotton	Gossypium Herbaceum
11-	कमल	Sacred Lotus	Nelumbo nucifera
12-	कपूर	Camphor Tree	Cinnamomum Camphora
13-	कुश	Holy Grass	Eragrostis Cynosuroides
14-	कुंद	Downy Jasmine	Jasminum multiflorum
15-	कुमुद	White Waterlily	Nymphaea lotus
16-	केला	Banana Plant	Musa paradisiaca
17-	केसर	Saffron	Crocus Sativus
18-	गूलर	Lusterfig	Ficus glomerata
19-	गुलाब	Rose	Rosa Rubiginosa
20-	चन्दन	Sandalwood	Santalum album
21-	चम्पा	Goden Champa	Michelia champaca
22-	जवासा	Persian Manna Plant	Alhagi pseudalhagi
23-	जामुन	Black Plum	Syzygium cumini
24-	जौ	Barlcy	Hordeum Vulgare
25-	ढाक, पलाश, टेसू	Bastard Teak	Butea monosperma
26-	तमाल	Indian bark/Indian Cassia	Cinnamomum Tamala
27-	ताल	Doub Plam / Tala Palm / Palmyra Palm / Toddy Palm	Borassus Flabellifer
28-	तुलसी	Basil	Ocimum tenuiflourum
29-	तिल	Sesame	Sesamum Indicum
30-	दूर्वा	Bermuda Grass	Gynodon Dactylon
31-	नीलकमल	Blue Waterlily	Nymphaea Stellata
32-	पान	Betal Leave	Piper betle
33-	पाटल	Yellow Snake Tree	Sterospermum Tetragonum
34-	बबूल	Indian Gum Tree	Acacia Arabica
35-	बाँस	Bamboo	Dendrocalamus strietus
36-	बेल	Bael/Bengal Quina/Golden Apple/Wood Apple	Aegle Marmelos
37-	बेर	Indian Jujube	Ziziphus mauritiana
38-	मूली	Radish	Raphanus Sativus
39-	मौलसिरी	Bullet Wood/Indian Medaller	Mumusops Elengi
40-	संजीवनी		
41-	सुपारी	Betalnut Palm/Arecanut Palm	Arcca Catechu
42-	हलदी	Turmeric	Curcuma

www.ignited.in

			Longa
43-	श्रीफल	Bael/Bengal Quina/Golden Apple/Wood Apple	Aegle Marmelos

रामचरितमानस में वर्णित वनस्पतियों के संदर्भ स्थान एवं तुलसीदासजी की वैचारिक प्रतीति

1. अनारः- अरण्य कांड, दोहा 29 ख के अग्रिम चै0 (6)

"कुंदकली दाड़िम दामिनी।

कमल सरद ससि अहि भामिनी।।

वरून पास मनोज धनु हंसा।

गज केहरि निज सुनत प्रसंसा।।"

गोदावरी के तट पर प्रभु श्री राम अपने आश्रम को जानकी रहित देखकर मनुष्यों की भांति दीन और व्याकुल हो गए।

कुंदकली, अनार, बिजली, कमल, शरद का चन्द्रमा, नागिन, वरूण का पाष, कामदेव का धुनष, हंस, गज और, सिंह - यें सब आज अपनी प्रषंसा सुन रहे हैं।

प्रतीति - वनस्पति विविधता का संरक्षण जिसके फलस्वरूप अनेकों वनस्पतियों, फलों, फूलों, जीव जन्तुओं का अनकों स्थानों पर तुलसीदास जी ने वर्णन किया है तथा उनकी विविधता का जीवन्त रूप प्रस्तुत किया हैं। वनस्पतियों, फलों, फूलों एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों को सीता जी के सौन्दर्य से पराजित होते हुए कहकर उन्हें मानव समाज की भावनाओं से जोड़ा है।

2. अशोक- अरण्यकांड, दोहा 28 के अग्रिम चै0 (13)

"गिरी पर बैठे कपिन्ह निहारी।

कहि हरिनाम दीन्ह पट डारी।।

एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ।

वन असोक मॅह राखत भयऊ।"

सीता जी के हरण के समय स्वयं सीताजी ने पर्वत पर बैठे हुए बंदरों को देखकर हरिनाम लेकर वस्त्र डाल दिया। वह सीताजी को ले गया उन्हें अषोक वन में जा रखा।

सीता जी को रावण ने अशोक वन में रखा जहाँ बहुमूल्य वनस्पतियों की भरमार है।

वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं के सान्निध्य के बिना मानवीय दुखों एवं कष्टों की निवृत्ति असम्भव लगती है। इसीलिए शायद सीता जी ने बंदरो को देखकर वस्त्र डाल दिया। प्रकृति के विभिन्न अवयव परिवार की सीमा के अन्तर्गत ही होते हैं।

3. अक्षयवट या अखय वटुः- बालकांड, दोहा 43 ख, के अग्रिम चै0 (3)

"पूजहि माधव पद जलजाता।

परसि अखय बटु हरषहिं गाता।।

भारद्वाज आश्रम अति पावन।

परम रम्य मुनिवर मन भावन।।"

लोग श्रीवेणी माधव जी के चरण कमलों को पूजते हैं और अक्षयवट का स्पर्ष करके उनके शरीर पुलकित होते हैं। भारद्वाज जी का आश्रम पवित्र, रमणीय मन को भाने वाला है। तुलसीदास जी ने ऋषि, मुनियों के आश्रमों को विस्तृत वर्णन करते हुए वनस्पतियों के सौन्दर्य, पवित्रता, मनभावन, स्वास्थ्यवर्धक रूप को प्रस्तुत किया है। उस समय वन क्षेत्र पृथ्वी के बड़े भू-भाग थे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या नहीं थी। वन क्षेत्रों में ऋषि मुनियों के पावन रम्य आश्रम थे। जो कि ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र भी थें अर्थात् पर्यावरण शुद्वता का ध्यान ऋषि मुनियों के आश्रमों में विषेष रूप से रखा जाता था।

4. अच्छतः- बालकांड, दोहा 295 ख, के अग्रिम चै0 (4)

"ध्वज पताक पट चामर चारू।

छावा परम विचित्र बाजारू।।

कनक कलस तोरन मनि जाला।

हरद दूब दधि अच्छत माला।।"

ध्वजा पताका, परदे और सुन्दर चवरों से सारा बाजार बहुत अनूठा छाया हुआ है। सोने के कलष, तोरण, मणियों की झालरें, हल्दी, दूब, दही अच्छत और मालाओं से।

जानकी जी और श्रीराम जी के विवाह के शुभ समाचार को सुनकर अयोध्यावासी सम्पूर्ण नगर को सजाने लगे। संकेत है कि मानवीय इच्छाएँ और सम्वेदनाएँ प्रकृति से सम्बन्धित हैं

www.ignited.in

इसीलिए हल्दी, दूब, अच्छत जो कि वनस्पतियों से प्राप्त होती है। इन सभी साधनों द्वारा ही मनुष्य अपने शुभ और अषुभ दोनों ही कार्याेंं को पूरित करता है अर्थात् प्रकृति ही मानव की सुख दुख की सहचरी है। रामचरित मानस में हम पाते है। कि सभी प्राकृतिक अवयवों का मात्र उपभोग की वस्तु ही नहीं माना गया है बल्कि उनका सभी मनुष्यों, जीवों, वनस्पतियों से सम्बन्ध स्थापित किया है।

5. अर्क या मादारः- किष्किंधा कांड, दोहा 14 के अग्रिम चै0 (2)

"अर्क जवास पात बिनु भयऊ।

जस सुराज खल उद्यम गयऊ।।

खोजत कतहुँ मिलइ नहिं धूरी।

करइ क्रोध जिमि धरमहिं दूरी।।"

अर्क और जवास बिना पत्ते के हो गए जैसे श्रेष्ठ राज्य में दुष्टों का उद्यम जाता रहा (उनकी एक भी नहीं चलती)। धूल कहीं खोजने पर भी नहीं मिलती जैसे क्रोध धर्म को दूर कर देता है।

रामचरित मानस में हम पाते हैं कि प्रकृति और मानव सकारात्मक हो एवं नकारात्मक, दोनों ही पहलू में एक दूसरे से घनिष्ट रूप से जुड़े रहते हैं। तुलसीदास जी ने उपरोक्त चैपाई में अर्क का बिना पत्ते के होना से मानव स्वभाव की धूर्तता की तुलना का अद्भुत एवं सटीक उदाहरण प्रस्तुत किया है। तुलसीदास जी ने वैयक्तिक वृत्ति और पर्यावरण के समन्व्य को भली भांति समझा है।

6. अन्नः- किष्किंधा कांड, दोहा 14 के अग्रिम चै0 (3)

"ससि सम्पन्न सोह महि कैसी.।

उपकारी के सम्पत्ति जैसी।।

निसि तम घन खद्योत विराजा।

जनु दंभिन्ह कर मिला समाजा।।"

अन्न से युक्त (लहलहाती हुई खेती से हरी भरी) पृथ्वी कैसी शोभित हो रही है जैसे उपकारी पुरूष की सम्पत्ति। रात के घने अंधकार में जुगनू शोभा पा रहे है मानों दम्भियों का समाज आ जुटा हो।

अन्न का लहलहाना यानि पावन पर्यावरण एवं उपकारी स्वभाव दोनों ही हमारे जीवन के आस्तित्त्व के लिए आवश्यक हैं। प्राकृतिक पर्यावरण हमारी मनोवृत्ति के सुधार में भी सहायक है। भारतीय संस्कृति में व्याप्त आचार व्यवहार तो मानस की आधार शिला रही है। अन्न से युक्त पृथ्वी का सुशोभित होना और उपकारी की सम्पत्ति दोनों ही समाज के लिए कल्याणकारी हैं।

7. आम या रसालाः- अरण्यकांड, दोहा 39 ख के अग्रिम चै0 (3)

"ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए।

चहु दिसि कानन विटप सुहाए।।

चंपक बकुल कदंब तमाला।

पाटल पनस परास रसाला।।"

पम्पा सरोवर के समीप मुनियों के आश्रम में चारों ओर सुन्दर वृक्ष हैं। चंपक, बकुल, कदम्ब, तमाल, पाटल, पनस, परास रसाल इतने वृक्षों की सम्पदा हमारे उपभोग के लिए विद्यमान है। अतः प्रकृति द्वारा प्रदत्त वस्तुओं का उपभोग हमें प्रकति से छेड़छाड़ किए बिना करना चाहिए। पम्पा सरोवर के समीप अनेकों वृक्षों का होना पर्यावरण संरक्षण की ओर संकेत करता है।

सन्दर्भ सूची

आधार ग्रन्थ:

1. श्रीरामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2072
2. ब्रह्मवर्चस, आयुर्वेद का प्राणः वनौषधि विज्ञान, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार, तृतीय संस्करण, अप्रैल 2003
3. आरोग्य अंक, गीताप्रेस, गोरखपुर, संवत 2071, 22 संस्करण
4. Sala AV, Indian Medicinal Plant, Orient Longman Limited, Chennai, 1997
5. Tripathi K.D., Essential of Medical Pharmacology, Pub. by Jaypee brothers medical Publishers, 6th Edition

6. Fox, J.E., Sandalwood% the royal tree, Biologist (london), 2000

रिसर्च जर्नल्स की सूची:

1. Shah, Manan Review on "The Aspects of Granatum", Journal of Pharmaceutical Science And Bioscientific Research (JPSBR), Vol. 1, Issue 3, Nov-Dec 2011

2. Turenka, Julie (2011). "Therapeutic Applications of Pomegranate (Punica granatum): A Review, Alternative Medicine Review, Vol 13, No 2

3. Baranwal Amrita & Devi, Sarita (2016). "Ashoka (Sarca Indica) in Indian Traditional Medicine : A Review, IMPACT : International Journal of Research in Applied Natural and Social Science, ISSN(E): 2321-8851, ISSN(P): 2347-4580, Vol. 4, Issue 5, May 2016

4. Sarin, Y.N. (1996). Illustrated Manual of Herbal Drugs used in Ayurveda, Council of Scientific & Industrial Research9India), Indian Council of Medical Research, New Delhi.

5. Parvez Masud G.M. (2016). Pharmacological Activities of Mango (Mangnifera Indica): A Review, Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry, 5(3), ISSN(E) 2278-4136

6. Mohanapriya M. & Ramaswamy Lalitha (2012). Amla-The Wonder of Ayurvedic Medicine, International Journal of Ayurvedic and Herbal Medicine, 2(5), Oct-2012, ISSN-2249-5746

7. Manali Mrs., Bhinde M., Sachin Mr., Hitave A. (2014). Roles of Embica Officinalis(Amla) in Medicine, World Journal of Pharmacy and Pharmaceutical Sciences, Vol-3, Issue-6, 2014, ISSN 2278-4357

8. Arova Tejpal & Parle Amrita (2016). Jackfruit: A Health Boon, International Journal Res. Ayurveda Pharm., 7(3), May-June 2016

9. Rahman Khaleequr, Sultana, Rahman Shafeequr (2012). Gossypium Herbaceum Linn: An Ethnopharmacological Review, JPSI, 1(5), Sept-Oct 2012, ISSN(Online): 2277-4572, www.jpsionline.com

10. Sheikh Ahmad Subzar (2014). Ethno-medicinal uses and pharmacological activities of lotus (Nelumbo nucifera), Journal of Medicinal Plant Studies, ISSN 2320-3862, 2(6).

11. Pal Imana, Dey Purnima (2015). A Review on Lotus (Nelumbo nucifera) Seed, International Journal of Science and Research (IJSR), Vol-4, Issue-7, ISSN(Online): 2319-7064, www.ijsr.net/archive

12. O.J. Akinjogunla, A.A. Adegoke, I. Pudokang and B.C. Adebayo Tayo (2009). Antimicrobial potential of Nymphaea lotus (Nymphaeaceae) against wound pathogens, Journal of Medicinal Plants Research, Vol.3(3), March, 2009

13. Sampath Kumar K.P., Bhowmik Debjit, Duraivel S., Umadevi M., Traditional and Medicinal Uses of Banana, Journal of Pharmacognosy and Phytochemistry, ISSN 2278-4136, Vol-1, Issue 3

14. The Wealth of India, National Institute of Communication and Information Resources, Council of Scientific and Industrial Research, New Delhi, 4

15. Kumar, Arun N.A., Joshi Geeta and Ram Mohan Y.H. (2012). Sandalwood: history, uses, present status and the future, current Science, Vol. 103, No. 12, 25 Dec 2012

16. Misra, B. Biswapriya, Dey, Satyahari (2013). Biological Activities of East India Sandalwood Tree, Santalum album, Published-12 Nov 2013, http://peerj.com/preprints/96v1

17. S Raja, Koduru, Ravindranadh (2014). A Complete Profil on Michelia Champaca-Traditional Uses, Pharmacological Activities and Phytoconstituents, International Journal for harmaceutical Research Scholars (IJPRS) V-3, I-2, 2014, ISSN No: 2277-7873

18. Helmstadter (2008). Syzygium cumini (L.) Skeels(Myrtaceae) Against Diabetes: 125 Years of Researach, Pharmazine, Vol. 63, No.2.

19. The Ayurvedic Pharmacopeia of India, Government of India, Ministry of Health and Family Welfare, Department of Ayush, 1999, (Part 1), Vol-2

20. Srivastava Bhavana, Sharma Himanshu, Dey N. Yadu, Wanjari M Manish, Jadhav D. Ankush (2014). Alhagi Pseudalhagi: a review of its phyto-chemistry, pharmacology, folklore claims and

Ayurvedic studies, International Journal of Herbal Medicine, ISSN-2321-2187.

21. Apte Madhavi (2014). An Overview of Butea Monosperma (flame of Forest), World Journal of pharmacy and Pharmaceutical Sciences, vol. 3, Issue. 1, ISSN 2278-4357

22. Bhateja Sumit, Arora Geetika (2012). therapeutic Benefits of Holy Basil(Tulsi) in General and Oral Medicines: A Review, published by: Moksha Publishing House, IJRAP 3(6), Nov- Dec 2012, www.mokshaph.com

23. Das Kumar Subir, Vasudevan M.D., Tulsi (2006). The Indian holypower plant, Natural Product Radiance, Vol.5(4).

24. Preeti & Tripathi Shalini, Ziziphus Jujuba (2014). A Phytopharmacological Review, International Journal of Research and Development in Pharmacy and Life Science, April-May 2014, Vol. 3, No.3, ISSN: 2278-0238

वेबसाइट की सूची:

1. http://en.wikipedia.org/wiki/pomegranate

2. http://en.wikipedia.org/wiki/saraca_asoca

3. http://en.wikipedia.org/wiki/jackfruit

4. Anthocephalus Cadamba, www.worldagroforestry.org/treedb/AFTPDFS/ Anthocephalus_cadamba.PDF

5. http://en.wikipedia.org/wiki/cotton

6. http://en.wikipedia.org/wiki/ Jasminum_multiflorum

7. http://en.wikipedia.org/wiki/Nymphaea_lotus

8. BANANA, National Horticulture Board Report, nhb.gov.in/report-files/banana/BANANA.htm

9. http://hi.wikipedia.org/wiki/ केला

10. http://enwikipedia.org/wiki/santalum_album

11. Michelia Champaca, www.worldagroforestry.org/treedb/AFTPDFS/Michelia_ champaca.PDF

12. http://en.wikipedia.org/wiki/Syzgium_cumini

13. http://en.wikipedia.org/wiki/ Butea_monosperma

14. Ziziphus Mauritiana, www.worldagroforestry.org/treedb/AFTPDFS/Ziziphus_ mauritiana.PDF

15. http://en.wikipedia.org/wiki/Bamboo

16. www.alwaysayurveda.com/bambosa_ bumbos

Corresponding Author

Navita Rani*

Research Scholar, OPJS University, Churu, Rajasthan